इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र

संजारी

आप सभी सादर आमंत्रित हैं।

मांगणियार

अनवर ख़ान

1. श्री अनवर खान – मांगणियार – प्रमुख गायक
2. श्री रोशन खान – मांगणियार – हारमोनियम वादन और गायन
3. श्री रफीक खान – मांगणियार – कामायचा वादन
4. श्री हुगड़ा खान – मांगणियार – ढोलक वादन
5. श्री जेसा खान – मांगणियार – खडताल वादन
6. श्री सवाई खान – मांगणियार – मोरचंग वादन

30/12/2017

समय साय 6:30 से

स्थान ऑडिटोरियम सी. वी. मैस, बिल्डिंग, जनपथ, नई दिल्ली–110001

वेबसाइट: www.ignca.nic.in

ईमेल: igncakaladarsana@gmail.com

फेसबुक: www.facebook.com/IGNCA; ट्विटर: Twitter: @igncakd

उत्तरापेक्षी: +91-11-23388155 (9:00 बजे से 5:30 बजे तक)

अनवर खान मांगनियार का परिचय ---
अनवर खान मांगनियार राजस्थानी लोक संगीत के सर्वाधिक लोकप्रिय सुरीले गायक हैं ...,गाँव बईया, तहसील फतेहगढ़ ,जैसलमेर में जन्मे अनवर खान जी ने अपने पिताजी स्व. श्री रमजान खान से बचपन में ही संगीत की तालीम ली ...12 वर्ष की उम्र में आप, लोक कला विद पद्मभूषण कोमल कोठारी जी के संपर्क में आये और लोक गायकी के प्रस्तुतीकरण के गुर सीखे ...लोक गायन की परम्परा के बारे में कोमल दा के यहाँ जमा होते गुणी जनों से भी बहुत कुछ सीखा ..कोमल दा के मार्गदर्शन में अपनी गायकी को देश विदेश में प्रसिद्धि दिलाई ...देश विदेश के कई मूर्धन्य संगीतकारों के साथ मंच साझा किया इनमें पंडित विश्वमोहन भट्ट ,उस्ताद ज़ाकिर हूसैन ,उस्ताद सुल्तान खान और शिवमणि प्रमुख हैं..आपको राजस्थान संगीत नाटक अकादेमी और राजस्थान सरकार से सम्मान मिले हैं | संगीत के प्रति गहरी समझ ,अपनी परम्परा से जुड़ाव के साथ नवाचार, सुरीली गायकी और सुरीली सोच के कारण आपने संगीत जगत में अपना खास स्थान बनाया है....
परम्परागत संगीतकार के घर में जन्मे अनवर जी के पुत्र रोशन खान भी गायक हैं और पोता मोती खान जो मात्र डेढ़ साल का है गाता बजाता है ....और संगीत की परम्परा की अगली कड़ी बन रहा है..

दिनांक 30 जनवरी का कार्यक्रम

श्री अनवर खान मांगणीयार एवं साथियों द्वारा संजारी के
राजस्थानी मांगणीयार लोक गायन शैली का विशेष कार्यक्रम -

कार्यक्रम में जीवन चक्र से जुड़े मांगलिक गीतों को गाया जावेगा ...श्री अनवर खान हर गीत की प्रस्तुति के पहले एक दोहा गायेंगे और वो दोहा उसी राग में होगा..तथा उस दोहे में उस राग का नाम भी आवेगा .
कार्यक्रम की शुरुवात गजानन वंदना से शुरू होगी -महाराज गजानंद आओ जी ..म्हारी मण्डली में रंग बरसाओ जी ...ये रचना राग तोड़ी में है ..

1. घोड़लियो -ये स्वागत गीत है जिसमें जंवाई ,भाई ,मामा या फिर कोई भी मेहमान हो सकता है जिसके सम्मान में ये गीत गाया जाता है ..पुराने ज़माने में यात्रा घोड़े और ऊँटों पर की जाती थी ..इसमें आने वाले मेहमान के घोड़े की भी प्रसंशा की जाती है कि वो साधारण कुँए का पानी नहीं पीता ...वो गंगा जल ही पीता है ... ये रचना राग सारंग में है
2. हलारियो ---ये गीत मांगणीयार कलाकारों द्वारा अपने जजमान के घर में बच्चे के जन्म के समय गाया जाता है ...ये हालरिया कृष्ण भगवान के शिशु स्वरुप का है -" मथुरा में बाजा ढोल,गोकुला खबर पड़ी म्हारा राज ..धन धन हालरिये री माँ ..धन धन जसोदा माँ ...बच्चे के सुन्दर और सुरीले वर्णन से बच्चे की माँ,पिता और पूरा परिवार प्रफुल्लित हो जाता है |... इस सुन्दर गीत को अनवर जी ..राग सामेरी में गा रहे हैं ....

3. बना ---बच्चा जब बड़ा हो जाता है ...तब उसका संबोधन “बना” के रूप में होता है ...बना की प्रसंशा में ये गीत गाया जाता है ... “केसर बना पल पल लगो प्यारा”..ये गीत राग भैरवी में है ...शास्त्रीय गायन में राग भैरवी समापन पर गाया जाता है लेकिन लोक गायन इस बंधन से मुक्त है ...
4. सुन्दरियो ---बना जब शादी के लिए तैयार हो जाता है तब उसको सुगन्धित अत्तर लगाया जाता है .. दूल्हे की उसी सजावट का गीत है “अंतरियो”–जिसे राग खमाज में गाया जा रहा है जिसे “खमायती” भी कहते हैं ...
5. कोतल घोडलो ---शादी के बाद बना अपनी दुल्हन को लेकर घर आ रहा है ..उस शानदार माहौल का वर्णन लड़के के घर के मांगनियार इस प्रकार करते हैं ...गीत के बोल कितने प्यारे हैं ..आगे आगे कोतल घोडलो ,लारे बनी सा रो रथडो राज ...म्हारे रे आंगनिये आप पधारो बींद राजा ....
6. होली (अ)----शादी के बाद होली का त्यौहार ज्यादा ही महत्वपूर्ण हो जाता है ....इसमें पहला प्रसंग है विरह का ...जिसमें होली के समय पति दूर है ...पर होली का वर्णन कितना खूबसूरत है ... आई रे पिया जी रे देस म्हारो श्याम हटीलो...कानो केसर खेल होली ...होली खेले महादेव खेल ,विलत गणपति गौरी ....इसमें राग तिलंग और तोड़ी पर आधारित है...
7. होली (ब)----विरह प्रसंग से हम चलते हैं ख़ुशी के प्रसंग में ...जी हाँ ..जब नाइका का पिया घर आया है ...और गीत है ....अबीर गुलाल की होली... ढोली केसर कीच मचाई रे ...ये

गीत भी तोड़ी और तिलंग पर आधारित है..खूबी देखिये ..राग वही पर प्रसंग बिलकुल विपरीत ....

8. झिर मिर बरसे मेह ---ये एक विरह गीत है ...जिसके भाव ये हैं कि नाइका का पति विदेश है और वर्षा ऋतु भी उसे सुहानी नहीं लग रही ....ये गीत राग मल्हार और देस पर आधारित है ....
9. सियालो ...उणालो ....बरसालो ---ये गीत तीनों ऋतुओं का वर्णन करते हैं ...जो राग सूब पर आधारित हैं ....
10. भजन ----ये सूफी भजन है जिसमें दाता की महिमा का वर्णन है ...---- जीया जून जल थल में दाता ...जहाँ देखा वहां तू ही तू ...ये भजन राग आसा पर आधारित है .....

------इसके अलावा जीवन के दर्शन पर आधारित सूफी गीत फरमाइश पर गाये जा सकते हैं जिनमें बुल्ले शाह ,बाबा फरीद और कलंदर साहब की रचनाएँ शामिल हो सकती हैं ...ये सब उपलब्ध समय पर निर्भर करेगा ...

अनवर खान मांगणीयार दर्शकों की मांग पर पुराने अप्रचलित गीत भी गाएंगे जिसकी भूमिका वे खुद बताएंगे ...

---------- मांगनियार गायकी के बारे में ---

मांगनियार पश्चिम राजस्थान के पेशेवर गायक होते हैं ...इनके जजमान अधिकतर राजपूत और वाणिक समुदाय के होते हैं .. मांगणीयारों का रहन सहन भी हिन्दुओं रीति रिवाजों से मिलता जुलता है इनके द्वारा गाये हुए गीत महिलाओं के गीत होते हैं ..जबकि दोहे पुरुषों के होते हैं .... मांगणीयार अपने जजमानों के

परिवार के मांगलिक प्रसंगों पर उसी विषय के गीत गाते हैं ..बच्चे के जन्म, नामकरण ,सगाई ,शादी ,विदाई हर प्रसंग पर गीत गाते हैं ...इन्हें सैकड़ों गीत याद रहते हैं ...गीतों की ये विरासत एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक वाचिक परंपरा के रूप में हस्तांतरित होते हैं...इनके बच्चों को भी घर में संगीत का माहौल मिलता है और वे स्वाभाविक रूप से इस कला को सीखते रहते हैं .... मांगणीयार गायकों को संगत कामयाचा,हारमोनियम,ढोलक और खड़ताल की होती है ...इस दल के साथ एक और वाद्य है जिसे मोरचंग कहते हैं... बीच में मोरचंग और ढोलक की जुगलबंदी भी होगी..